लेख-1

# नवयुग के आगमन का पर्व है–महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि पर्व का बड़ा महात्म्य है। भारतीय कैलेण्डर के अनुसार फाल्गुन मास साल का अंतिम मास तथा नये साल के शुभारम्भ का समय होता है। फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। परन्तु सृष्टि के कल्प के अंत में परमात्मा के अवतरण और मनुष्यात्माओं को आत्म-ज्ञान द्वारा जागृत कर नवयुग में ले जाने तुल्य बनाना ही इस पर्व की आध्यात्मिक महत्ता है। भारत के कोने-कोने में शिवलिंग पर ओम् नमों शिवाय: के मंत्रोच्चार के बीच इस महापर्व का मनाया जाना, परमात्मा के महान कार्यों का 'शिवरात्रि' नामकरण है। शिवरात्रि पर्व केवल एक परम्परा नहीं बल्कि पुराने युग अर्थात कलियुग की विदाई और नवयुग अर्थात सतयुग के आगमन का परिचायक है।

वैसे तो प्रतिवर्ष नये साल का आगमन और पुराने वर्ष की विदाई होती है। इसी तरह नये युग का आगमन और पुराने युग की विदाई होती है। इस सृष्टि चक्र में चारों युगों को मिलाकर एक कल्प बना है। नये कल्प का आगमन तथा पुराने कल्प की विदायी के संगम पर महान परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन में मनुष्य के उत्थान और उसके पतन की कहानी का खुलासा होता है। कल्प के आदि में मनुष्यात्मायें सतोप्रधान और सोलह कला सम्पूर्ण होती हैं परन्तु धीरे-धीरे जन्म-मरण के चक्र में आते-आते कलियुग के अन्त में कलाहीन और तमोप्रधान हो जाती हैं। यहाँ पर मनुष्य का विवेक माया के अधीन हो जाता है और विकारों की अग्नि में मानवता का खात्मा होने लगता है। स्थिति तो यहाँ तक हो जाती है कि मनुष्य की श्रेष्ठ वृत्ति आसुरी वृत्ति में बदल जाती है। कल्प के आदिकाल में सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत विकारों और व्यभिचारी, अत्याचार, भ्रष्टाचार वाला भारत बन जाता है। सृष्टि चक्र के इस अविरल काल में कई ऐसी धार्मिक और आध्यात्मिक घटनायें घटती हैं जो कर्मकाण्ड और यादगारों के रूप में मनाई जाती है परन्तु सबसे बड़ी घटना शिवरात्रि के रूप में घटती है।

शिवरात्रि पर्व इसलिए मनाया जाता है कि जब पुन: नये कल्प का आरम्भ तथा पुराने के अन्त का समय आता है और मनुष्यात्मायें पतित भ्रष्टाचारी हो जाती हैं तब परमात्मा इस अज्ञानता की रात्रि में सोई मनुष्यात्माओं को जागृत कर उन्हें श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। स्थूलता में भावनाओं को अर्पित करने के लिए बनाया गया शिवलिंग परमात्मा शिव की ही प्रतिमा है। चूँकि परमपिता परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दू और निराकार है। इसलिए उसको साकार में दर्शन और पूजा करने के लिए शिवलिंग बनाया गया है। इस स्वरूप की अन्य धर्मों में भी पूजा और अर्चना की जाती है, भले ही उसे अलग-अलग नामों से जाना जाता हो। परमात्मा के सम्बन्ध में विभिन्न धर्मों में प्रचलित 'नूर', 'डिवाईन लाईट', 'ओंकार' और 'ज्योतिस्वरूप' भाषा के स्तर पर ही भिन्न है।

**नवयुग से पूर्व की महारात्रि:** यह तो विदित है कि नवयुग के आगमन से पूर्व कलियुग की रात्रि अर्थात महारात्रि होती है। आज दृष्टि उठाकर चारों तरफ देखिये तो पापाचार, अनाचार, अत्याचार और अज्ञानता का ही बोलबाला है। भारतीय दर्शन में ऐसे समय को घोर रात्रि की संज्ञा दी जाती है और ये विनाशकाल का ही सूचक है। **मनु ने कहा है-'आसीदिदं तमोभूतम् प्रज्ञानम् लक्षण्म'**। स्थूल में जब घोर रात्रि होती है तो रात्रिचर प्राणी और नकारात्मक प्रवृत्तियों के लोग अपने बुरे कार्यों को अंजाम देते हैं। उसमें मनुष्य के साथ की मानवता, दानवता में बदल जाती है। लोग आपस में ईर्ष्या, द्वेष और नफरत की आंधी में जल रहे होते

हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह के कारण मनुष्य धर्म-जाति के नाम पर खून-खराबे, बलात्कार और अपहरण जैसी घटनायें अपने चरम पर पहुंच जाती है। यह अज्ञानता की घोर रात्रि नहीं तो और क्या है? यह परम सत्य है कि जब कोई चीज अपनी अति में हो जाती है तो अन्त अवश्यम्भावी होता है। ये सारे चिन्ह युग परिवर्तन के प्रबल संकेत होते है। इसी अज्ञानता की रात्रि में परमात्मा शिव ब्रह्मलोक से इस साकार लोक (पृथ्वी) पर साधारण मानव तन प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नयी सृष्टि की स्थापना कर नये युग का सूत्रपात करते हैं।

**शिवरात्रि की सार्थकता:** समय की नाजुकता को देखते हुए हमें केवल परम्परागत रूप से शिवरात्रि का पर्व मनाकर इतिश्री नहीं कर लेना चाहिए बल्कि शिवरात्रि के वास्तविक रहस्य जानकर इसे मनायें ताकि हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आये। शिवरात्रि के दिन शिवलिंग पर चढ़ाये जाने वाली वस्तुएं आध्यात्मिक रहस्यों की ओर इशारा करती है। देवी-देवताओं के मंदिरों में सदैव सुन्दर खुशबूदार फूल, पकवान आदि चढ़ाते हैं परन्तु जगतकल्याणकारी परमात्मा शिव की प्रतिमा शिवलिंग पर निरर्थक वस्तुएं क्यों चढ़ायी जाती है? इसका भी आध्यात्मिक महात्म्य है। अक का फूल देखने में सुन्दर होता है परन्तु उसमें खूशबू नहीं होती, बेलपत्र किसी भी फूल की श्रेणी में नहीं आता, भांग श्रेष्ठ और संयमी मनुष्यों का आहार नहीं है। जो मनुष्य के लिए उपयुक्त नहीं है वह भगवान पर भला कैसे चढ़ाया जा सकता है। इनका अर्थ है कि आज जो मनुष्यों के अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि बुराइयां हैं जिससे मनुष्य स्वयं तो दुखी होता ही है परन्तु दूसरों को भी दु:खी करता है। इनको परमात्मा के ऊपर अर्पण कर परमात्मा शिव भोलेनाथ से सदगुणों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लें। परमात्मा ने कलियुग के अन्त में परमधाम से इस धरा पर आकर हम सभी मनुष्यात्माओं से यही मांगा था कि तुम मुझे अपनी बुराइयां दो और मैं तुम्हें सदगुणों और ईश्वरीय शक्ति से भरपूर कर दूंगा।

परमात्मा शिव इतने दयालु और कृपालु हैं कि वे हमारी बुराई को मांगकर सदगुण, सुख और शान्ति प्रदान करते हैं। इसलिए शास्त्रों में इनको दिखाया गया है कि राक्षस भी जब तपस्या करते थे तब वे प्रसन्न हो जाया करते थे। इसका अर्थ यही है कि आज मनुष्य आसुरी प्रवृत्तियों के कारण असुर समान बनता जा रहा है। अब पुन: परमात्मा अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा नर को नारायण और नारी को लक्ष्मी बनाने का महान कार्य कर रहे हैं।

**नवयुग आगमन की आहट:** आज विकारों में तो दुनियां जल ही रही है साथ-साथ आज विनाश के कगार पर पूरी भी खड़ी है। प्राकृतिक आपदाओं में ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा, परमाणु और हाईड्रोजन बमों का बढ़ता जखीरा, आतंकवादियों के खराब मंसूबे आदि किसी भी समय दुनिया को विध्वंस करने की क्षमता रखते हैं। यह कलियुग के अन्त का समय है जब परमात्मा आकर गुप्त रूप में नयी दुनियां की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए ज्ञान के पट खोल अज्ञानता को दूर भगाइये और परमात्मा को पहचान सच्ची शिवरात्रि मनाइये। यही परमात्मा शिव का संदेश है।

लेख-2

# *शिव अवतरण का यादगार है – महाशिवरात्रि का पर्व*

भारत में जितने भी पर्व मनाये जाते हैं, सब किसी न किसी के दिव्य कर्मों के यादगार होते हैं। किसी का जन्म दिन, किसी का निर्वाण तो किसी को महान कार्यों के लिए याद किया और मनाया जाता है। परन्तु सभी त्योहारों के पीछे आध्यात्मिक रहस्य होता है। यह मनुष्य को किसी न किसी रूप में परमात्म और अध्यात्म शक्तियों के साथ जोड़ता है। ये त्योहार सृष्टि के आदि-मध्य और अन्त में घटी घटनाओं की स्मृति दिलाते हैं। महाशिवरात्रि पर्व इन पर्वों में अपना अलग और विशेष महत्व रखता है। यूँ कहें तो यह आत्मा और परमात्मा के मिलन का पर्व, युग परिवर्तन की संधि बेला है। भोलेनाथ शिव ने इस दिन आकर सृष्टि को बदलने का महान कार्य किया था। इसलिए भारत तथा भारत से बाहर के देशों में इसे सर्वसम्मति से मनाया जाता है। इस दिन पूरे विश्व के शिवमंदिरों में आराधना, पूजा और साधना बड़ी तन्मयता से की जाती है।

**शिवलिंग-परमात्मा की प्रतिमा:** भारत में जितने शिव के मंदिर हैं शायद ही और किसी भी देवी-देवता के हों। भारत में सुप्रसिद्ध मंदिरों में द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध है। परमात्मा के अलग-अलग कार्यों के कारण उनको अनेक जगहों पर कर्त्तव्यवाचक नामों से पुकारा और याद किया जाता है। उज्जैन में महाकाल, गुजरात में सोमनाथ, वाराणसी में विश्वनाथ, अमरनाथ, मुम्बई में बबूलनाथ, नेपाल में पशुपतिनाथ, भारत के दक्षिण में रामेश्वरम आदि-आदि ये सब परमात्मा के कर्त्तव्यवाचक नाम है। परन्तु इन मंदिरों में सभी जगह केवल शिवलिंग होता है। शिवलिंग के बारे में बहुत सी भ्रांतिया है। वास्तव में 'शिव' का अर्थ कल्याणकारी तथा 'लिंग' का अर्थ चिन्ह होता है। जब मनुष्यों में आत्मिक शक्ति होती है तो अपने तीसरे नेत्र से परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जानकर याद करते हैं। परन्तु भौतिकता की बहुलता होने पर दिव्य नेत्र से न देख पाने के कारण स्थूल में पूजा-अर्चना करना चाहते हैं इसलिए स्थूल में शिवलिंग की प्रतिमा बनाकर पूजा करते हैं। शिव सभी आत्माओं, देव-आत्माओं और महात्माओं के भी परमात्मा और पूज्य हैं। यही कारण है कि शिवलिंग की पूजा श्रीकृष्ण, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, प्रजापिता ब्रह्मा, श्री विष्णु और स्वयं शंकर ने भी की है। परमात्मा अजन्मे और अशरीरी हैं इसलिए उनकी स्थूल रूप में पूजा कैसे की जाये इसके लिए 'शिवलिंग' का निर्माण किया गया। शिवलिंग का रूप प्राय: काला दिखाते हैं। इसका अर्थ है कि परमात्मा पतित काली दुनिया में आते हैं और आसुरी बुराइयों से मुक्ति दिलाते हैं।

प्राय: 'शिवलिंग' पर तीन लकीरें और उसके बीच में गोल बिंदू अंकित होता है। इसका अर्थ है कि तीन देवताओं के रचयिता भी ज्योतिर्बिन्दू परमात्मा शिव हैं। इसलिए स्थूल रूप में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए तथा पूजा-अर्चना करने के लिए शिवलिंग बनाया गया है।

**परमात्मा शिव के दिव्य कर्म:** वैसे तो भगवान और भक्तों के बीच अनेक कार्य होते रहते हैं। परन्तु विश्व कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव पूरे कल्प में एक ही बार महान कार्य करते हैं जिनकी यादगार में शिवरात्रि मनायी जाती है। जैसा कि गीता में कहा गया है-

*यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।*
*अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।। (अध्याय 4, श्लोक-7)*
*परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।*
*धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (अध्याय 4, श्लोक-8)*

***जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वतः।***

***त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति ममेति सोउर्जुन।। (अध्याय-4, श्लोक-9)***

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि दिव्य परमात्मा का जन्म भी दिव्य और अलौकिक है। जब संसार में घोर धर्म ग्लानि तथा अधर्म का राज होता है तब परमात्मा एक धर्म की स्थापना तथा अनेक धर्मों के विनाश के लिए इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं। आज संसार में अनेक धर्म और अधर्म की काली साया में सारा संसार जल रहा है। आज ऐसी घटनायें समाज में घटित हो रही है जिनका जिक्र सृष्टि के किसी भी युग में नहीं किया गया है। यह धर्म की ग्लानि नहीं तो और क्या है। आज जरा अपने पट खोलकर देखिए कि क्या हो रहा है समाज में। सच ही किसी ने कहा है कि ***देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान।*** आज पूरी मानवता अपनी इस दुर्दशा पर आंसू बहा रही है। अब इससे घोर अधर्म और क्या हो सकता है। इस अज्ञानता की रात्रि में ही परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर एक श्रेष्ठाचारी दुनिया की स्थापना कराते हैं। इस महान कार्य का यादगार महाशिवरात्रि मनाते हैं।

**कैसे मनायें शिवरात्रि:** सभी देवी-देवताओं के मंदिरों में फूल-माला, दुध, धूप, अगरबत्ती तथा अन्य श्रेष्ठ पूजा सामग्री का प्रयोग करते हैं परन्तु परमात्मा के यादगार दिवस शिवरात्रि के पर्व पर भांग, धतूरा, बेलपत्र तथा अक का फूल आदि निरर्थक वस्तुओं को अर्पण करते हैं। कहते हैं कि परमात्मा इसको स्वीकार कर खुश होते हैं, इसका भी गहरा आध्यात्मिक रहस्य है। परमात्मा जब इस सृष्टि पर आते है तो यही कहते है कि बच्चे अपने अन्दर इस प्रकार की जो भी निरर्थक बुराइयां हैं, जो स्वयं को तथा दूसरों को दुख देने वाली तथा दानवता के लिए प्रेरित करने वाली हैं, उनको मुझ पर अर्पण कर मेरे से दैवी गुणों और शक्तियों को अपने जीवन में अपनाओ।

अब वर्तमान समय संसार में चारों तरफ लोगों के अन्दर सदगुण, अवगुण में बदल गये हैं, मानवता दानवता में, अहिंसा-हिंसा तथा प्रेम-नफरत में बदल गया है। इसलिए परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश और नयी दुनिया की स्थापना का गुप्त रूप में महान कार्य कर रहे हैं। इसलिए अब परमात्मा का आह्वान है कि हे मनुष्यात्माओं, उठों और अपने स्वधर्म तथा अपने परमपिता शिव को पहचान दैवी गुणों को धारण कर दैवी राज्य के अधिकारी बनो।

आज शिवरात्रि की सार्थकता तभी होगी जब हम विवेकसम्मत होकर वर्तमान विनाश के काल में जा रही दुनिया को पहचानकर परमात्मा के संग अपना बुद्धियोग जोड़ें तथा नयी और श्रेष्ठाचारी दुनिया के अधिकारी बनें। वरना अन्त में पछताने के सिवाय कुछ नहीं बचेगा और न ही गंगा स्नान करने और शिव के ऊपर भांग धतूरा चढ़ाने से कुछ नहीं मिलेगा यही शिवरात्रि का संदेश और अभिप्राय है।

लेख-3

# *शिव, शिवरात्रि और जागरण का आध्यात्मिक रहस्य*

हमारे देश में शिवरात्रि का पर्व हर वर्ष मनाया जाता है। इस दिन शिवभक्त, शिव-मंदिरों में जाकर शिवलिंग पर लोटी, बेल-पत्र आदि चढ़ाते, पूजन करते, उपवास करते तथा रात्रि को जागरण करते हैं। शिवरात्रि को सार्थक बनाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि शिव कौन हैं तथा उनकी रात्रि क्यों मनाते हैं? परमात्मा शिव के ऊपर बेल-पत्र चढ़ाना, उपवास तथा रात्रि जागरण करना एक विशेष कर्म की ओर इंगित करता है। क्योंकि जो कर्मकाण्ड मनुष्यों द्वारा किये जाते हैं उनके पीछे आध्यात्मिक रहस्य समाया होता है जिसमें समूची मानवजाति तथा व्यक्तिगत स्तर पर मनुष्य के हित और अनहित की कड़ी निहित होती है। आज के सन्दर्भ में केवल आडम्बर और परम्परायें ही रह गयी हैं। इसलिए आवश्यकता है कि इस महान पर्व के महत्त्व तथा इसके आध्यात्मिक यादगार को जानें-पहचाने व अपने जीवन में अमल करने की पहल करें।

भारत के कोने-कोने में शिव के लाखों मंदिर हैं जिनमें शिव की प्रतिमा 'शिवलिंग' के रूप में पाई जाती है। कश्मीर में अमरनाथ, गुजरात के सौराष्ट्र में सोमनाथ, वाराणसी में विश्वनाथ, उज्जैन में महाकालेश्वर तथा नेपाल में पशुपतिनाथ के रूप में प्रसिद्ध शिव के मंदिर हैं। इन शिवालयों के नाम परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्यों के परिचायक हैं जिनसे संकेत मिलता है कि शिव ही परमात्मा हैं। कहा जाता है कि दक्षिण भारत तमिलनाडू में रामेश्वर के स्थान पर श्री राम ने तथा वृन्दाबन में गोपेश्वर के स्थान पर श्रीकृष्ण ने भी शिव का पूजन किया था। यह वृत्तान्त भी इस सत्यता के द्योतक हैं कि शिव ही देवों के देव एवं श्री राम और श्रीकृष्ण के भी परमपिता परमात्मा हैं। शिव की प्रतिमा का शिवलिंग के रूप में दिखाया जाना सिद्ध करता है कि परमात्मा निराकार है जिसका देवी-देवताओं जैसा कोई साकार पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग का स्वरूप नहीं वरन ज्योतिर्लिंग निराकार स्वरूप है। इसलिए भारत के 12 सुप्रसिद्ध शिवालयों को 'ज्योतिर्लिंगम मठ' कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर तीन सूक्ष्म व आकारी देवताओं के भी रचयिता होने के कारण निराकार परमात्मा शिव को त्रिमूर्ति भी कहते हैं।

शिवलिंग पर जो तीन लकीरों वाली त्रिपुण्डी होती है वह शिव परमात्मा के त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी एवं त्रिलोकीनाथ होने का प्रतीक है। शिव को 'शम्भू' अर्थात 'स्वयं भू' तथा 'सदा शिव' भी कहा जाता है जिसका अर्थ है कि शिव ही परमात्मा हैं जिसका कोई रचयिता नहीं। शिव का शाब्दिक अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शिव ही पावन मनुष्य सृष्टि की स्थापना, पालना तथा पुरानी पतित सृष्टि से सर्व बुराइयों के विनाश के अपने तीन दिव्य कर्त्तव्यों द्वारा मनुष्य मात्र का कल्याण करते हैं अर्थात् सर्व को गति, सदगतिप्रदान करते हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि शिव ही परमात्मा हैं।

**शिवरात्रि का रहस्य:** विचार की बात है कि जब सभी शरीरधारी देवताओं, महात्माओं आदि के स्मृति दिवस, जनमदिन के रूप में मनाये जाते हैं तो फिर शिव की ही रात्रि' क्यों मनाते हैं। उदाहरणार्थ, श्रीकृष्ण के जन्म का समय मध्य रात्रि माना जाता है तो भी जन्माष्टमी को श्रीकृष्ण का जन्मदिन ही कहेंगे। केवल शिव की ही 'रात्रि' मनाते हैं। इसका तात्पर्य क्या है? वास्तव में शिवरात्रि का परम पर्व स्वयं परमपिता परमात्मा के सृष्टि पर अवतरित होने की स्मृति दिलाता है। यहाँ 'रात्रि' शब्द अज्ञान-अन्धकार से होने वाले नैतिक पतन का द्योतक है। परमात्मा ही ज्ञान सागर हैं जो मानव मात्र को सत्य ज्ञान द्वारा अन्धकार से प्रकाश की ओर अथवा असत्य से सत्य की ओर ले जाते हैं। भगवानुवाच है कि जब सृष्टि पर अति धर्म ग्लानि हो जाती

है तब मैं परमात्मा स्वयं अवतरित होकर अधर्म का विनाश एवं सतधर्म की पुनर्स्थापना करके पतित आसुरी सृष्टि को पावन दैवी सृष्टि बनाता हूँ।

प्रश्न उठता है कि परमात्मा शिव सृष्टि चक्र में अपना यह दिव्य अलौकिक कार्य कब और कैसे करते हैं? विचार करेंगे तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि परमात्मा शिव द्वारा स्थापना, पालना, विनाश का यह कर्त्तव्य सृष्टि चक्र में कलियुग-अन्त, सतयुग-आदि के संधि काल अथवा 'संगम' के समय ही चलता है क्योंकि सारे चक्र में यही समय विश्व नव निर्माण का सिद्ध होता है। इस समय परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के भाग्यशाली शरीर रूपी रथ (भागीरथ) में अवतरित होकर सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना हेतु ईश्वरीय सत्य ज्ञान सुनाते हैं। परमात्मा साधारण मनुष्यों की तरह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते बल्कि अपने महावाक्यों अनुसार प्रकृति को अधीन करके ब्रह्मा तन में प्रवेश करके 'दिव्य जन्म' लेते हैं अर्थात् अवतरित होते हैं। परमात्मा के अवतरण के बारे में गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि परमात्मा जन्म-मरण और पाप-पुण्य आदि कर्मों से परे हैं। जो मनुष्य जिस रूप में उनकी पूजा करता है उसकी उसी रूप में इच्छा की पूर्ति करता है।

आज जबकि सृष्टि पर पुन: भ्रष्टाचार , अनाचार एवं अत्याचार सर्वत्र फैल चुका है और चारों ओर नैतिकता का पतन अपनी चरम सीमा को प्राप्त हो चुका है तो परमात्मा शिव मनुष्य मात्र को अज्ञान-निद्रा से जागृत करने के लिए पुन: प्रजापिता ब्रह्मा-वत्सों (ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारियों) द्वारा सत्य ज्ञान देकर एवं सहज राजयोग सिखलाकर 'पवित्र बनो, राजयोगी बनो' का ईश्वरीय संदेश दे रहे हैं। यह संदेश परमात्मा के अवतरण की सच्ची घटना है। प्रत्येक धर्म तथा अध्यात्म प्रेमी को अपने तीसरे दिव्य नेत्र से वर्तमान दुनिया की जर्जर हालत और शास्त्रों में वर्णित कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के चिन्हों को पहिचान कर मनन कर लेना चाहिए। आज सभी लोगों को अन्तर्मन से यही महसूस हो रहा है कि यह कौन सा युग चल रहा है। क्योंकि आज के सन्दर्भ में घटने वाली घटनाओं ने मानवता और दानवता के भेद को भी नष्ट कर दिया है। मनुष्य अज्ञानता की अंधेरी रात में अपने विवेक का इस्तेमाल केवल विध्वंसक प्रवृत्तियों और अकल्याण के लिए कर रहा है।

शिवरात्रि पर सच्चा उपवास यही है कि हम परमात्मा शिव से बुद्धि योग लगाकर उनके समीप रहें। उपवास का अर्थ ही है उप + वास अर्थात समीप रहना। जागरण का सच्चा अर्थ भी काम, क्रोध आदि पांच विकारों के वशीभूत होकर अज्ञान रूपी कुम्भकरण की निद्रा में सो जाने से स्वयं को सदा बचाये रखना है क्योंकि यहाँ स्थूल निद्रा की बात नहीं है। यदि व्यक्ति स्थूल निद्रा में हो तो उसको कोई भी जगा सकता है परन्तु अज्ञान निद्रा में सोये व्यक्ति को केवल परमात्मा ही उठाता है। इसलिए शिवरात्रि के पर्व पर जागरण का महत्व है। तो आइये, हम सब इस आध्यात्मिक महत्त्व को जानकर शिवरात्रि को सार्थक मनायें।

लेख-4

# *शिव और शक्ति के मिलन का पर्व है–महाशिवरात्रि*

भारत देश त्यौहारों और पर्वो का देश है। इन पर्वों और उत्सवों में कई ऐसे उत्सव हैं जिन्हें महोत्सव की संज्ञा दी जाती है। ये महोत्सव सभी उत्सवों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। भारत में जितने पर्व और उत्सव मनाये जाते है उनमें महाशिवरात्रि का पर्व महोत्सव के रूप में याद किया और मनाया जाता है। यह देवों के देव महादेव, त्रिलोकीनाथ, मृत्युंजय, कालों के काल महाकाल, तीन देवताओं के रचयिता परमात्मा शिव और शक्ति के मिलन का पर्व है। इस पर्व को समस्त जगत की मनुष्य आत्माओं और परमात्मा के मिलन का पर्व भी कहते हैं। इस पर्व से ही पूरी दुनियां में नारियों को देवी, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, शीतला और मनसा की देवी की उपाधि मिली है। परन्तु बदलते परिवेश में इन महोत्सवों की केवल मान्यताएं और परम्पराएं ही रह गयी हैं जिसकी आध्यात्मिक व्याख्या न जानने के कारण प्रभु तथा अध्यात्म प्रेमी वर्तमान समय के दृष्टिकोण से पूजा-अर्चना कर इतिश्री कर लेते हैं। इसलिए इस महोत्सव से जो मनुष्य को प्राप्त होना चाहिए उसकी प्राप्ति का अभाव सा हो गया है।

**शिव और शक्ति के मिलन का वास्तविक रहस्य:** परमपिता परमेश्वर शिव में, स्त्री और पुरुष दोनों का भाव समाया होता है। इसलिए उन्हें अर्धनारीश्वर भी कहते हैं। शिव पुराण और वेदों में भोलेनाथ को शिव का तथा पार्वती को शक्ति का रूप दिया गया है। यहाँ केवल एक शक्ति की बात नहीं है। परमात्मा समस्त जगत में आत्माओं के पिता हैं और पतियों के भी पति हैं। परमात्म शक्तियों से जब नारी शक्ति सम्पन्न हो जाती है तब वह शिवशक्ति की उपाधि से नवाजी जाती है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि ***'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'*** अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवतायें निवास करते हैं। आज समाज में एक मुंह से दो विरोधाभासी बातें निकलती हैं। एक तरफ तो नारी की महिमा की जाती है और दूसरी तरफ उन्हें सर्पिणी और नर्क का द्वार कह दिया जाता है।

जब संसार में मनुष्यों में आसुरी वृत्तियों के कारण मानवीय रूप बदलकर आसुरी स्वरूप हो जाता है, दुनिया पतित और काली हो जाती है, मानवता लुप्त होने लगती है तब एक नयी सृष्टि के सृजन की आवश्यकता होती है। मनुष्य में इतनी अज्ञानता हो जाती है कि वह परमात्मा द्वारा रचित अपनत्व की जगह पराया, प्रेम की बजाय नफरत और अहिंसा के बजाय हिंसा पर उतारू हो जाता है। तब इस प्रकार की अज्ञानता को भारतीय मनीषा में रात्रि के रूप में परिभाषित किया जाता है। ऐसी अज्ञानता की रात्रि में परमात्मा का इस धरा पर अवतरण होता है। वे नारी को पुन: उसके शक्ति स्वरूप का अनुभव कराते हैं तथा दुर्गुणों से मुक्त कराकर दुर्गा, ज्ञान धन से सम्पन्न लक्ष्मी, ज्ञान का वीणा वादन करने वाली सरस्वती योग्य बनाते हैं और पूरे जगत में ज्ञान का शंखनाद कराकर एक नयी सृष्टि के सृजन के कार्य में नारियों को अर्पित कर महान कार्य कराते हैं। इसलिए इस उत्सव को महोत्सव कहते हैं।

इस महाशिवरात्रि के पर्व पर स्त्रियां ही प्रमुखता से व्रत और उपासना करती हैं। इस महापर्व पर यह मान्यता है कि युवतियां अपने सच्चे, अच्छे और सद्गुणयुक्त वर की कामना करती है। ताकि उनका जीवन सम्पूर्ण सुखों से भरपूर हो। परमात्मा शिव सत्य और सुन्दर है। उसके अन्दर कोई भी अवगुण नहीं है तथा सर्व गुणों और सुखों का सागर है। परमात्मा शिव को जो वरने का संकल्प लेती हैं उनके जीवन का रक्षक स्वयं सर्वकल्याणकारी परमात्मा शिव हो जाते है और उनका जीवन युगों-युगों के लिए धन्य और सुखी हो

जाता है। यह केवल युवतियों के लिए ही नहीं होता वरन् संसार में जितनी भी आत्मायें है वे सब पार्वती और सीता की भांति हैं जिनकों बुराइयों के इस राक्षस ने अपने वश में कर लिया है जिससे पूरे संसार में आतंक, हिंसा और अश्लीलता का माहौल है। ऐसे वक्त में हमें परमात्मा को सर्व सम्बन्धों की डोरी में बांधकर जीवन सौंप देना चाहिए। इससे हमारा जीवन पूर्ण रूप से सफल हो जायेगा।

**महाशिवरात्रि पर्व की सार्थकता और सच्ची उपासना:** इस युग परिवर्तन बेला में पुरानी दुनियां का महाविनाश, नयी दुनियां की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश एक धर्म की स्थापना तथा शान्ति और स्वर्णिम संसार की रचना के सन्दर्भ में *शिवपुराण के आठवें अध्याय तथा वायवीय संहिता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'सृष्टि के सृजन के लिए देवों के देव महादेव जगत कल्याणकारी परमपिता शिव ब्रह्मा की रचना करके उन्हें सृष्टि सृजन का दायित्व सौंपते हैं'* इसके अनुसार परमपिता परमात्मा शिव इस कलियुग के अन्त तथा सतयुग के आदि पुरुषोत्तम संगमयुग में प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा नयी दुनियां की स्थापना का गुप्त कार्य करा रहे हैं।

इसके लिए परमात्मा का यही संदेश है कि जीवन में भांग-धतूरा तथा बेलपत्र के समान निरर्थक तथा दूसरों को दु:ख देने वाली बुराइयों को मेरे उपर अर्पण कर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी जैसा बनने का दिव्य कर्म करो। इसके साथ पूरे जगत में काम, क्रोध, लोभ और भौतिक साधनों एवं सत्ता में फंसी दु:खी अशान्त आत्माओं को ईश्वरीय संदेश देकर उन्हें सुख-शान्ति के अधिकारी बनाने का महान कार्य करो। 'उपासना' का अर्थ है कि आज झूठी माया, झूठी काया और झूठा सब संसार में अनेक बन्धनों को तोड़ 'उपा' अर्थात एक, 'सना' अर्थात सानिध्य अर्थात् एक परमात्मा शिव के सानिध्य में रहने का अभ्यास कीजिए। महाताण्डव और विपदा की घड़ी में परमात्मा शिव ही इससे मुक्ति दिला सकते हैं।

अत: सर्व मनुष्यात्माओं को चाहिए वे इस नाजुक और परिवर्तन की घड़ी में स्वयं तथा परमात्मा को पहचान अपने जीवन में दैवी गुणों का समावेश करें तथा परमात्मा शिव से मिलन मनायें। यह पर्व ही आत्मा अर्थात शक्ति और परमात्मा शिव के मिलन का पर्व है। इसके आध्यात्मिक रहस्य को जानकर मनाने में ही इस महापर्व की सार्थकता है और यही परमात्म संदेश है।

लेख-5

# *तीन देवों के भी देव है–महादेव*

परमपिता परमात्मा सर्व मान्य और विश्वकल्याणकारी हैं। इनका कर्म दिव्य और अलौकिक है। पूरे सृष्टि के बीज रूप हैं। इसलिए शिवरात्रि भारत के सभी त्यौहारों में महान और दिव्य है। परमात्मा शिव को त्रिलोकीनाथ, त्रिदेव, त्रिमूर्ति और परकल्याणकारी कहा गया है। प्राचीन काल में जब लोगों के अन्दर आत्मिक शक्ति थी तब वे इस रहस्य को भलीभांति जानते थे और मानते थे। परन्तु बदलते समय तथा गिरते मूल्यों के दौर में इस रहस्य का रूप बदल गया और लोग लकीर के फकीर हो गये। यही कारण है कि आज तक महादेव के रूप और कर्म की स्पष्ट व्याख्या नहीं हो पायी। परन्तु परमात्मा शिव ने पुराण तथा भगवद्गीता में अपने वास्तविक स्वरूप और अपने दिव्य कर्म को स्पष्ट किया है। परमात्मा जन्म-मरण से न्यारे और कर्मबन्धनों से मुक्त होते हुए भी पूरी सृष्टि का संचालन सुव्यस्थित और सुचारू रूप से करते हैं। इसलिए परमात्मा शिव को त्रिकालदर्शी भी कहा गया है। क्योंकि वे तीनों लोकों और तीनो कालों को जानते हैं।

**तीन देवताओं की रचना की आवश्यकता:** जिस तरह से किसी भी प्रबन्धन या मैनेजमेन्ट को चलाने के लिए अनेक लोगों की आवश्यकता पड़ती है। इसी तरह यह सृष्टि भी एक बहुत बड़ा प्रबन्धन और संस्थान है। सृष्टि चक्र के समयानुसार परमात्मा द्वारा स्थापित नयी दुनिया की स्थापना, पालना और जर्जर तमोप्रधान दुनिया के विनाश का कार्य सन्निहित है। इसके लिए तीन देवताओं की आवश्यकता पड़ती है। परमात्मा कल्याणकारी है। परन्तु जो परमात्मा सम्पूर्ण विश्व का मालिक है, उसका स्पष्ट स्वरूप प्राय: लुप्त हो गया है। इसके सन्दर्भ में पूरी सृष्टि के संचालनकर्त्ता परमकल्याणकारी परमात्मा शिव ने कहा कि हमारे रूप को न तो देवता, न ऋषि-मुनि और न ही मनुष्य जानते हैं। इसके सम्बन्ध में गीता में कहा गया है कि:

*सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।*
*न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवा:।।*

अर्थात परमात्मा के स्वरूप को न तो देवता जानते हैं और न ही दानव। परमात्मा शिव का साकार शरीर नहीं है। वे सर्वशक्तिवान और सर्वगुणों एवं शक्तियों के भण्डार हैं।

**प्रजापिता ब्रह्मा की रचना:** जब इस सृष्टि पर काले कर्मों वाली रात होती है जिसमें मनुष्य वे सभी कर्म भूल जाते है जिससे मानव जाति तथा स्व का कल्याण हो। मानवता का दीपक बुझने लगता है, अपने-पराये की पहचान समाप्त हो जाती है ऐसे वक्त में पुन: एक सर्वगुणों युक्त मानवी मूल्यों से परिपूर्ण, एकता और वसुधैव कुटुम्बकम् वाली दुनियां की आवश्यकता पड़ती है। तब इस सृष्टि का उद्धार करने के लिए भगवान साधारण तन वाले प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करते हैं। (शिवपुराण के नौवें अध्याय में इसका स्पष्ट वर्णन किया है।) प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सर्व मनुष्यात्माओं को तीनों लोकों, तीनो कालों व स्वयं अपना परिचय देने के लिए इस मानवीय तन का सहारा लेते है। इसलिए इस महामानवी और साधारण तन को 'भागीरथ' और शिव की सवारी नन्दीगण भी कहा गया है। यही कारण है कि शास्त्रों में अन्य देवताओं की अपेक्षा ब्रह्मा को दाढ़ी मूंछ वाले साधारण तन के रूप में दिखाते है। उनके तीनों मुखों का अर्थ तीनों लोकों और तीनों कालों अर्थात भूत, भविष्य और वर्तमान के ज्ञान से परमात्मा अवगत कराते हैं। इसलिए उनके तीन मुख दिखाते हैं। यह रचना कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि अर्थात संगमयुग में होती है, जिसमें साधारण तन वाले ब्रह्मा की रचना करते हैं।

**नवीन सृष्टि की पालना के लिए विष्णु की रचना:** कल्याणकारी परमात्मा जगन्नाथ, विश्वनाथ जब अज्ञानता की रात्रि में अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नयी दुनियां का सृजन कर लेते है। इसके पश्चात श्रेष्ठाचारी दुनिया की पालना के लिए सोलह कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवताओं की पालना के लिए विष्णु की रचना करते हैं।

**विनाश के लिए शंकर की रचना:** घोर कलियुग और अज्ञानता की रात्रि में गुप्त रूप में जब नयी दुनिया की स्थापना पूर्ण हो जाती है तब इस पतित, विकारी, अधर्मी, आसुरी दुनिया के विनाश की आवश्यकता पड़ती है जिसके लिए शंकर की रचना करते हैं। इसलिए कहते हैं कि जब शंकर का तीसरा नेत्र खुला तो इस सृष्टि का महाविनाश होता है। इसलिए प्रजापिता ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की रचना इस महाभारत काल में ही होती है। इन तीन देवताओं की रचना करके परमात्मा शिव इस सृष्टि का संचालन करते हैं। इसलिए परमात्मा शिव को तीन देवताओं का भी देव कहा जाता है। यही कारण है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव भोलेनाथ का ध्यान ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों करते हैं। विष्णु पुराण में इन तथ्यों का स्पष्ट उल्लेख है।

**शिवरात्रि पर परमात्मा का संदेश:** यह शिवरात्रि आसुरी प्रवृत्तियों का सर्वनाश तथा दैवी शक्तियों की स्थापना का दिव्य और अलौकिक समय है। आज चारों तरफ अधर्म में पूरा समाज आकण्ठ डूबा हुआ है। इसे घोर अधर्म वाली दुनिया नहीं तो और क्या कहेंगे। वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना कर परमात्मा शिव जन-जन में व्याप्त अज्ञानता को दूर कर नयी दैवी गुणों वाली दुनियां की स्थापना के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर नयी दुनिया की स्थापना का महान कार्य कर रहें हैं। यह समय अज्ञानता में सोने का नहीं बल्कि जागरण का है।

परमात्मा शिव का यह संदेश है कि मनुष्यात्माओं, अज्ञानता की नींद से उठो और स्वयं को तथा अपने परमपिता परमात्मा को पहचान ईश्वरीय शक्तियों से अपने अन्दर की बुराइयों को समाप्त कर दैवी गुणों का संचार करो। आज चारो ओर आसुरी शक्तियों का बोलबाला है। यह अन्त समय की निशानी है और इसी वक्त में परमात्मा को पहचान लेना ही हमारी बुद्धिमत्ता है। वर्तमान समय महाविनाश के लिए विज्ञान के अस्त्र-शस्त्र, प्रकृति और मानव तीनों प्रतीक्षा कर रहे हैं। समयानुसार महाविनाश तो होगा ही इसलिए समय रहते स्वयं को परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनियां के अधिकारी बनो, यही परमात्मा शिव का आदेश और संदेश है। अन्यथा महाविनाश के समय पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं बचेगा।